મહા સુદ-૫   વસંત પંચમી

સાજ: સફેદ

વસ્ત્ર સફેદ લાલ કીનારનો

શ્રી મસ્તકે શૃંગાર પાગ કતરી

સામગ્રી ખાજાનો મગજ

શ્રી પ્રભુ ને જગાડવા, સીંહાસન મઢેરા, પંચામૃત પીછવાઈ

અગાઉ આગલી સાંજે પિછવાઈ બદલવી
સિંહાસન, ખંડપાટ ની દરેક પર સફેદ મલમલના વસ્ત્ર આવે
રજાઈ તકીયે પર પણ સફેદ વસ્ત્ર આવે

વસંતનો ગડવો :- ત્રાંબાનો લોટો
તેમાં સરસવ, ઘઉં, રાઈ, ખજૂરના છોડના
ડાળખા ખોસવા, આંબાનો મોર ખોસવો, બોર લીંબુડા
આચ્છાદન કરી તે ઉપર લોટો મૂકી મલમલનું ઢાંકું
વસ્ત્ર લપેટવું. પછી અધિવાસન કરવું
શ્રીમદ્નંદકુમારસ્ય વસંતાધિવાસનં કરિષ્યે બોલી
જલ છાંટી ચંદન અક્ષત કરી મિશ્રી ભોગ ધરવો
આરતી કરવી.
ફલેરા સિંહાસન સામા પધરાવી રાજભોગ મૂકે
વસંતનુ ઉત્સવ: આરંભથી - ડોલિઉ પ્રભુપતી પાનભોગ
લેવુ
વસંતના લોટાને ચંદન, અબીલ, ગુલાલ છીરકી શ્રી ઠાકોરજી
પાસે રાખી ઉપર ચંદન-કુંકુમ ભીંજવેલ અબીલ, ગુલાલ
સાથીયા ધરવું.
કિર્તન આરંભ થતા   ચાર ચાર બે બાજુ લગાવવા
પિછવાઈ ઉપર કંકુના હાથા
પ્રથમ - શ્રી ઠાકોરજી ને કેસરવાળા કંકુથી (નેત્રમાં ન પડે તેમ)
છીરકી ખેલાવવા.
પછી શ્રી સ્વામિનીજી, શ્રી શાલિગ્રામ, શ્રી ગિરિરાજજી શ્રી ગરુડજી
અનુક્રમે ખેલાવવા.
કેસર છીરકી સાથિયા લગાવી, અબીલ, ગુલાલ છાંટવા
સિંહાસન, વસ્ત્ર, ખંડપાટ, પિછવાઈ ની. પછી વૈષ્ણવને
પછી ભોગ ધરી ટેરો આવે.

વસંત પંચમી થી મહા વદ ૩ સુધી શિયાળાના રંગીન વસ્ત્રો આવે
શ્રી નાથજી ના પાટોત્સવ (મહા સુદ ૭) પછી ન આવે
વસંતમાં ત્રણ આરતી થાય   મંગળામાં, રાજભોગ, શયન સુધી)
નિત્યની રીત
આડ પિછવાઈ   વસંતપંચમી, મહાસુદ ૧૫, શ્રી નાથજી પાટોત્સવ, મહા વદ ૬
ફાગણ સુદ ૯, ભોગીયા, કુંજ એકાદશી, ફાગણ સુદ ૧૩, ડોલોત્સવ
[illegible]

अभ्यंग) माघ सुदी ५ - बसंत पंचमी
नाम संख्या
जगायवे मैं - नित्य क्रम
मं. सन्मुख - मंगल आर्ति गोपालकी
अभ्यंग - कर मोदक कहा ओढी
शृंगार होत - खंडिता - बसंत बहार शित विदाके पद लेने
राजभोग आये - घर भोजन के सरे - बिरी - नित्य
राज-खेलमें - दोनो अष्टपदी, श्री पंचमी परम मंगल दिन,
गावत चली बसंत बधावन, चली है भरम गिरिधरन
पं लालकी, आई है हम नंदजुके द्वारे, आयो रितुराज,
उत्सव भोग आवे - कुन्च गुडवा जोबन मोर, लाल ललित ललिता
टीक संग लीये, मदन महा महोत्सव आज,
राज-सन्मुख - श्याम सुभग तन शोभित छिंटे,
भोग-आर्ति - कुसुमित कुंज विपिन वृंदावन, आई बसंत रितु आज
बैठे मोरे
ब्यारु-दुध-बिरी - श्री लाल बसंत की
शयन सन्मुख - केसर सों भीजयो बागो - ४०
मान पोढवे में - राधीका आज आनंद में डोले, राय गिरिधरन संग

(1) — મંગલા સન્મુખકે પદ ॥ રાગ ભૈરવ ॥ ॥ મંગલ આરતી ગોપાલકી માઈ ॥ નિત્યપ્રતિ મંગલ હોત નિરખ સુખ ચિતવન નયન વિશાલકી ॥૧॥ મંગલરૂપ શ્યામ સુંદરકે મંગલ ભ્રકુટી સુભાલકી । ચત્રુભુજ પ્રભુ સદા મંગલનિધિ બાનિક ગિરિધર લાલકી ॥૨॥

अभ्यंगके पद

(2) ★ राग देवगंधार ★ कर मोदक माखन मीश्री ले कुंवर के संग डोलत नंदरानी । मिसकरी पकरि न्हवायो चाहत मुख बोलत मृदुबानी ॥१॥ कनकपटा आंगनमें राख्यो शीत उष्ण धर्यो पानी । विविध सुगंध उबटनो केसर चंदन कंगाइ आनी ॥२॥ आवो मनमोहन मेरी ढिंग बात कहुं एक छानी । खिलोना तात अमोल मंगाये बलि अजहु नहीं जानी ॥३॥ यों लाइ मंजन हित जननी चित चतुराइ ठानी । मनमें मतो

करत उठभाजै दुखित केश अरुझानी ॥४॥ राजकुंवर अधन्हातही भाज्यो ताकी कहुं कहानी । बेनी न बढी रहीजु तनकसी दुलहनी देख हंसानी ॥५॥ फिर न्हाये पहरे पटभूषण आनंद मनमें आनी । विष्णुदास गिरिधरन सयाने मात कही सो मानी ॥६॥

શૃંગાર રૂપ: ખંડિતા પંક્તિવાર શિયાળાના પદ.

(3) २६ राग मालकौंस शिशिर ऋतुको आगम भयो प्यारी बिदा भयो हेमन्त ॥ विरहिनिके भागिनतें आली आवत चल्यो वसन्त ॥१॥ जाहि दूतिके भवन बसे हो भाँवरि लीने कन्त ॥ कुंभनदास प्रभु या जाडेको आय गयो है अन्त ॥२॥

(4) २८ राग मालकौंस आयी आयी हो आगम ऋतु शिशिर की हेमंत बिदा भई जानी नवल पिय किनकर ॥ कर शृंगार पिय दरस करन व्हे मोद भरी मदभरी रस भरी गति गयंद स्थूल चरन ॥१॥ अंग अंग फूली वसंत मानो नख शिख सजी पटभूषण भरण ॥ माधो प्रभु दंपति सुख निरखत हसन दसन लागे फूल जरन ॥२॥

(5) ★ राग धनाश्री ★ लालको मीठी खीर जो भावे । बेला भरके लावत यशोदा बूरो अधिक मिलावे ॥१॥ कनिंया लिये यशोदा ठाडी रुचिकर कोर बनावे । गवालबाल वनचरके आगे झूठे हाथ दिखावे ॥२॥ व्रजनारी जो चहुंधा चितवत तन मन मोद बढावे । परमानंददासको ठाकुर हँस हँस कंठ लगावे ॥३॥ ★ राग

❀ राजभोग आये ❀ राग टोडी ❀ परोसत

(6) गोपी घूंघट मारे । कनक लता सी सुंदर सीमा आई है ज्योनारे ॥ १ ॥ झनक-मनक आंगन में डोलत लावण्य मोर सँवारे । नंदराय नंदरानी तैं-दुरि लाले भले निहारे ॥ २ ॥ घर की सोंज मिलाय थार में आगे लै जब धारे । परम मिलनिया मोहन जू की हांसी मिस हूंकारे ॥३॥ रुचिर काछनी जटित कोंधनी जूरो बांह उघारे । 'परमानंद' अवलोकन कारन भीर बहुत सिंहद्वारे ॥ ४ ॥ ❀ ५.३५ ❀ राग टोडी ❀ परोसति

(7) पाहुनी ज्योनारी । जेंवत राम कृष्ण दोऊ भैया नंदबाबा की थारी ॥ १ ॥ मोही मोहन को मुख निरखत-बिकल भई अतिभारी । भू पर भात कुरै भई ठाडी हसँत सकल ब्रजनारी ॥ २ ॥ कै याहि आंच हिये की लागी नव-जोबन सुकुमारी । 'परमानंद' यसोमति ग्वालिन सैनन बाहिर टारी ॥ ३ ॥

(8) ❀ ५.३६ ❀ राग टोडी ❀ चित्र सराहत दुरि मुरि चितवत गोपी बहुत सयानी । टकझक मे झुकि वदन निहारति अलक संवारति पलकन मारति जानि गई नंदरानी ॥ १ ॥ परगये परदा ललित तिवारी कंचनथार जब आनी । 'नंददास' प्रभु भोजन घर में उर पर कर धरयो वे उतते मुसिकानी

(९) ५४३ झांझ पखावज सूं ❀ राग बसंत ❀ हरिरिह ब्रजयुवतीशतसंगे । विलसति करिणीगणवृतवारणवर इव रतिपतिमानभंगे । ध्रु.व०। विभ्रमसंभ्रमलोल-विलोचनसूचितसंचितभावं । कापि दृगंचलकुवलयनिकरैरंचति तं कलरावं ॥ १ ॥ स्मितरुचिरुचिरतराननकमलमुदीक्ष्य हरेरतिकंदं । चुंबति कापि नितंबवतीकरतलधृतचिबुकममंदं ॥ २॥ उद्‌भटभावविभावितचापलमोहन निधुवनशाली । रमयति कामपि पीनघनस्तनविलुलितनववनमाली ॥ ३ ॥ निजपरिरंभकृतेनुद्रुतमभिविद्य हरिं सविलासं । कामपि कापि बलादक-रोदग्रे कुतुकेन सहासं ॥ ४ ॥ कामपि नीवीबंध विमोकससंभ्रमलज्जितनयनां । रमयति संप्रति सुमुखि बलादपि करतलधृतनिजवसनां ॥ ५ ॥ प्रियपरि-रंभविपुलपुलकावलि द्विगुणितसुभगशरीरा । उद्‌गायति सखि कापि समं हरिणा रतिरणधीरा ॥६। विभ्रमसंभ्रमगलदंचलमलयांचितमंगमुदारं । पश्यति सस्मितमपि विस्मितमनसा सुदृशः सविकारं ॥७॥ चलति कयापि समं सकर-ग्रहमलसतरं सविलासं । राधे तव पूरयतु मनोरथमुदितमिदं हरि रासं ॥८॥

(१०) अष्टपदी श्री जयदेव ❀५४०❀राग बसंत❀विहरतिहरिरिह सरसवसंते । नृत्यति युवतिजनेन समंसखि विरहिजनस्य दुरंते ॥ ध्रु०॥ ललितलवंगलतापरिशीलनकोमलमलयसमीरे । मधुकर निकरकरंबितकोकिलकूजितकुंजकुटीरे ॥१॥ उन्मदमदनमनोरथ पथिकवधूजनजनितविलापे । अलिकुलसंकुलकुसुमसमूह निराकुलबकुल-कलापे ॥ २ ॥ मृगमदसौरभरभसवशंवदनवदलमालतमाले । युवजनहृदय-विदारणमनसिजनखरुचिकिंशुकजाले ॥३॥ मदनमहीपतिकनकदंडरुचिकेसर-कुसुमविकासे । मिलितशिलीमुखपाटलपटलकृत स्मरतूणविलासे ॥ ४ ॥ विगलितलज्जितजगदवलोकनतरुणकरुणकृतहासे । विरहिनिकृंतनकुंतसुखा-

कृति केतकिदंतुरिताशे ॥ ५ ॥ माधविकापरिमलललिते नवमालतिजाति सुगंधौ । मुनि-मनसामपि मोहनकारिणि तरुणाकारणबंधौ ॥ ६ ॥ स्फुट-दतिमुक्तलतापरिरंभणमुकुलितपुलकितचूते । वृन्दावनविपिने परिसरपरि गतयमुनाजलपूते ॥७॥ 'श्रीजयदेव' भणितमिदमुदयति हरिचरणस्मृतिसारं । सरसवसंतसमयवनवर्णनमनुगतमदनविकारं ॥८॥ ❀ ५४१

(११) आये ❀ राग बसंत ❀ गावत चली बसंत बधायो नंदराय-दरबार । बानिक बनिठनि चोख-मोख सों ब्रजजन सब इकसार ॥ १ अंगिया लाल लसत तन सारी झूमक नव उर-हार । बेनी ग्रथित रुरत नितंब पर कहा कहूं बडडे बार ॥ २ ॥ मृगमद आड बडेरी अखियाँ आंजी अँजन पूरि । प्रफुलित वदन हसत दुलरावति मोहन जीवनमूरि ॥ ३ ॥ पग जेहरि केहरि कटि किंकिनी रह्यो विथकि सुनि मार । घोष-घोष प्रति गलिन-गलिन प्रति बिछु-वन के झनकार ॥ ४ ॥ कंचन कुंभ सीस पर लीने मदन-सिंधु ते भरि कैं। ढांपे पीत वसन जतनन करि मौर मंजरी धरि कैं ॥ ५ ॥ अबीर गुलाल अरगजा सोंधो विधि न जात विस्तारी । मैंन-सैन ज्योनार देन कों कमलनि कमलन थारी ॥ ६ ॥ पहुंची जाय सिंहपोरी जब विपुल जुवति समुदाई । निज मन्दिर ते निकसि जसोदा सन्मुख आगे आई ॥ ७ ॥ भई भीर भीतर भवनन में जहां ब्रजराजकिसोर । भरति भांवते प्रानपिया कों घेरि फेरि चहुं ओर ॥ ८ ॥ ब्रजरानी जब मुरि-मुसिकानी पकरन भई जब कर की । ल सङ्ग सखी लखी कछु बतियां मिस ही मिस उत सरकी ॥ ९ ॥ कुमकुम रङ्ग सों भरि पिचकारी छिरकैं जे सुकुमारी । बरजत छींटे जात दृगन मे धनि वे पोंछनहारी ॥ १० ॥ चन्दन वन्दन चोवा मथि कै नीलकंज लप-टावे । अलक सिथिल और पाग सिथिल अति पुनि वे बांधि बनावे ॥११॥ भरति निसंक भई अङ्कवारी भुजन बीच भुज मेलैं । उन्मद ग्वालि बदति नहिं काहू झेल-खेल रस रेलैं ॥ १२ ॥ कियो रगमगो ललित त्रिभंगी..

भयो ग्वालिन मनभायो । टकझक मे झुकि एकहि बिरियां लालन कंठ लगायो ॥ १३ ॥ ताल मृदङ्ग लिये श्रीदामा पहुँचे आय सहाई । हलधर सुबल तोक मधुमंगल अपनी भीर बुलाई ॥ १४ ॥ खेल मच्यो मणि-खचित चौक में कविपै कहा कहि जावे । 'चत्रुभुज' प्रभु गिरिधरनलाल छबि

(१२) देखे ही बनि आवे ॥ १५॥ ❀ ५४२ ❀ राग बसंत ❀ श्रीपंचमी परम मंगल दिन मदन-महोत्सव आज । बसंत बनाय चली ब्रजसुंदरि लै पूजा को साज ॥ १ ॥ कनक कलस जल पूरि पढत रति काममंत्र रसमूल । तापर धरी रसाल मंजरी आवृत पीत दुकूल ॥ २ ॥ चोवा चंदन अगर कुमकुमा नव केसर घनसार । धूप दीप नाना नीरांजन विविध भांति उपहार ॥ ३ ॥ बाजत ताल मृदङ्ग मुरलिका बीना पटह उपंग । गावत राग बसंत मधुर सुर उपजत तान तरंग ॥ ४ ॥ छिरकत अति अनुराग मुदित गोपीजन मदन-गोपाल । मानो सुभग कनक कदली मधि सोभित तरुन तमाल ॥ ५ ॥

यह विधि चली रतिराज बधावन सकल घोष आनन्द। 'हरिजीवन' प्रभु गोवर्धनधर जय-जय गोकुलचन्द ॥ ६ ॥ ❀ ५४३ ❀ राग वसंत ❀ कुच गड्डवा जोबन मौर कंचुकी वसन ढांपि राख्यो है वसन्त। गुन मन्दिर अरु रूप बगीचा ता मधि बैठी है मुख लसन्त ॥१॥ कोटि काम लावन्य बिहारी जू जाहि देखत सब दुख नसन्त। ऐसे रसिक 'हरिदास' के स्वामी ताहि भरन आई मिलन हसन्त ॥ २ ॥ ❀ ५४४ ❀ राग वसंत ❀ लाल ललित ललितादिक सङ्ग लिये बिहरत वर वसन्त ऋतु कला सुजान। फूलन की कर गेंदुक लिये पटकत पट उरज छिये हसत-लसत हिलि मिलि सब सकल गुन निधान ॥ १ ॥ खेलत अति रस जो रह्यो रसना नहिं जात कह्यो निरखि-परखि थकित भये सघन गगन जान। 'छीतस्वामी' गिरिवर-धर विट्ठल पद पद्मरेनु वर प्रताप महिमा ते कियो कीरति गान ॥ २ ॥

चलीहैंभरन गिरिधरनलालकों वनिवानि अनगनगोपी ॥ उवटीहैंउवटन नव लचपलतन मानोंदामिनीओपी ॥ २ ॥ पहरैंवसन विविधरंगभूषण करन कनिकपि चकाई ॥ चंचलचपलवडेरी अखियां मानो अरग लगाई ॥२॥ छिरकतचलीं गलीगो कुलकी कहीनपरत छविभारी ॥ उडिउडि केसरि बूकावंदन आटिगये अटाअटारी ॥ ३ ॥ सखनसहित साजिसांवरेसुंदर सुनतही सनमुखआये ॥ मानों अंवुज वनवास विवसव्हे अलिलंपट उठिधाये ॥ ४ ॥ हरिकर पिचका निरखित्रियनकेनैंनाछबि सौंठराई॥खंजनसे मानोंउडिबचलेहैं ढरकि मीनहे जाई ॥ ५ ॥ पहलैं कान्हकुंवर पिच काई भरिभरि त्रियनकोंमेली ॥ मानों सोमसुधाकर सींचत नवलप्रेमकीवेली ॥ ६ ॥ पियकेअंग त्रियनकेलोचन लपटेछबिकीओभा ॥ मानों हरिकमलनकरपूजे वनीहैं अनूपमसोभा ॥७॥ दुरिमुरिभरन वचावनि छविसों आवनिउलटनिसोहे ॥ घुमड्यो अबीरगुलाल गगनमें जोदेखेसो मोहे ॥ ८ ॥ विचविच छूटतकटाक्षकुटिलसर उच टि हल कोलागी ॥ मुरझिपर्यो लखिमेनमहाभट रति भुज भरिलेभागी ॥ ९ ॥ क हांलो कहों कहतनहींआवे छबिवाढी तिहिंकाला ॥ नंददासप्रभु तुम चिरजीवोवाल नंदकेलाला ॥१०॥१३॥ 卐

आज मदनमहोत्सव राधा ॥ मदनगोपाल वसंतखेलतहैं नागररूपअगाधा ॥ १ ॥ निधिबुधवार पंचमीमंगल ऋतुकुसमाकर आई ॥ जगतबिमोहन मकरध्वजकी जहांतहां फिरीदुहाई ॥ २ ॥ मनमथ राजासिंघासनबैठे तिलक पितामहदीनों ॥ छत्रचवर तूणीरसंखधुनि बिकटचाप करलीनों ॥ ३ ॥ चलो-सखी तहांदेखनजैये हरिउपजावतप्रीति ॥ परमानंददास कोठाकुर जानतहैंस-बरीति ॥ ४ ॥ २२ ॥ 卐

(૧૭) ૨૪ राग बसंत स्याम सुभगतन सोभित छींटें नीकीलागी चंदन की ॥ मंडित सुरंग अवीर कुंकुमा ओर सुदेस रजवंदन की ॥१॥ कुम्हनदास मदन तनमन बलिहारकीयो नंदनंदन की ॥ गिरिधरलाल रची विधिमानो युवतिजन मनफंदनकी ॥२॥

(૧૮) ૨ राग बसंत आई बसंतऋतु अनुपनूत कंतमोरे ॥ बोलत वन कोकिला मानों कुहुकुहु रस ढोरे ॥१॥ फूली वन राई जाई कुंद कुसम घोरे ॥ मदरस के माते मधुप फिरत दोरेदोरे ॥२॥ हम तुम मिलि खेलेंलाल कुंज भवन चौरे ॥ गोविंद प्रभु नंदसुवन खेलें इकठौरे ॥३॥

૧૧ राग बसंत श्रीगोवर्धन की सिखर चारूपर फूली नवमाधुरी जाई ॥ मुकलित फलदल सघन मंजुरी सुमन सुसोभा बहोतभाई ॥१॥ कुसमित कुंज पुंज द्रुमवेली निर्झर झरत अनेक ठांई ॥ छीतस्वामि व्रजजुवति जूथमें विहरत हें गोकुलके राई ॥२॥

૧૦ राग बसंत केसरिसों भीज्योवागो भरचोहे गुलाल ॥ कहूंकहूं कृष्णागर सोहेतन मोहे मन अतिही सुंदरवर बने नंदलाल ॥१॥ सरस फुलेल अरगजा भीने कच ढरकि रही जो पाग अर्धभाल ॥ जगतराय के प्रभु मुखहितं बोलछवि उरसि वनी सोहे सुमन माल ॥२॥

केदारो ★ राधिका आज आनंद मे डोलें । सांवरे चंद गोविंदके रस भरी दुसरी कोकिला मधुस्वर बोले ॥१॥ पहर तन नीलपट कनक हारावली हाथ लें आरसी रूपको तोले । कहत श्रीभट्ट व्रजनारि नागर बनी कृष्णके शीलकी ग्रंथिका खोले ॥२॥

॥ वसंत राग ॥ अष्टपदी ॥

(1) ॥ श्रीकृष्णायनमः ॥ श्रीगोपीजनवल्लभायनमः ॥ अथवसंत लिख्यते ॥ वसंत पंचमीकेपद मंगलामें ॥ राग भैरव ॥ आजकीबानिकपरहोंलालबलिबलिगई ॥ बिगलितकचसुमनपागदरकिरहीबामभागअंगअंगअलसई ॥१॥ अरुननैनझपकि जातबारंबारकछुजृंभातपीककपोलछई ॥ धनिसुहागभागजाकोमूरकेप्रभुसंगसब निसीबितई ॥ २ ॥१॥ 卐

(2) अलापचारीवसंतकी ॥ साखी ॥ आईऋतुवसंतकीगोपिनकीयेसिंगार ॥ कुमकुमबरनीराधिकासोनिरखतनंदकुमार ॥ आईऋतुवसंतकीफूली सबबनराई ॥ एकनफूलीकेतुकीऔफूलीसबबनजाई॥ श्रीगिरिराजधरनधीरलाडिलो ललनवर गाईये॥ श्रीब्रजराजकुंवरबरगाईये ॥ आनंदकीनिधिवरगाईये ॥ भक्तनको मन भामतोगाईये ॥ श्रीलाडिलोललनवरगाईये ॥ श्रीनवनीतप्रियलाडिलोललन वरगाईये ॥ श्रीमदनमोहनप्रियलाडिलोललनवरगाईये ॥ कुंजकुंजक्रीडाकरेंराजतरू पनरेस ॥ रसिकरसीलोरसभर्योराजतश्रीमथुरेस ॥ ४॥२॥ 卐

(3) हरिरिहब्रजयुवतीशतसंगे । विलसतिकरिणीगणवृतवारणवरइवरतिपतिमानभंगे ॥ ध्रु० ॥ विभ्रमसंभ्रमलोलविलोचनसूचितसंचितभावं ॥ कापिदृगंचलकु वलयनिकरैरंचातितंकलरावं॥ १ ॥ स्मितरुचिरुचिरतराननकमलमुदीक्ष्यहरेरतिकंदं ॥ चुंबतिकापिनितंबवतीकरतलधृताचिबुकममंदं ॥ २ ॥ उद्भटभावविभावित चापलमोहनानिधुवनशाली रमयतिकामपिपीनघनस्तनविलुलितनववनमाली। ३ । निजपरिरंभकृतेनुद्रुतमभिवीक्ष्यहरिंसविलासं ॥ कामपिकापिबलादकरोदग्रेकुतुके नसहासं ॥ ४ ॥ कामपिनीवीबंधविमोकससंभ्रमलज्जितनयनां ॥ रमयातिसंप्रतिसु मुखिबलादपिकरतलधृतनिजवसनां ॥ ५ ॥ पियपरिरंभविपुलपुलकावलिद्विगुणि तसुभगशरीरा ॥ उद्गायतिसखिकापिसमंहरिणारातिरणधीरा ॥६॥ विभ्रमसंभ्रमगल दंचलमलयांचितमंगमुदारं ॥ पश्यतिसस्मितमतिविस्मितमनसासुदृशःसविकारं ॥ ७ ॥ चलतिकयापिसमंसकरग्रहमलसतरंसविलासं ॥ राधेतवपूरयतुमनोरथमुदि तमिदंहरिरासं ॥ ८ ॥ ३ ॥ 卐

(4) ललितलवंगलतापरिशीलनकोमलमलयसमीरे ॥ मधुकरनिकरकरंबितको किलकूजितकुंजकुटीरे ॥ १ ॥ विहरतिहरिरिहसरसवसंते ॥ नृत्यतियुवतिजनेनसमं सखिविरहिजनस्यदुरंते ॥ ध्रु० ॥ उन्मदमदनमनोरथपथिकवधूजनजनितविलापे ॥ अलिकुलसंकुलकुसुमसमूहनिराकुलबकुलकलापे ॥ २ ॥ मृगमदसौरभरभसव शंवदनवदलमालतमाले ॥ युवजनहृदयविदारणमनसिजनखरुचीकिंशुकजाले ॥ ३ ॥ मदनमहीपतिकनकदंडरुचिकेसरकुसुमविकासे ॥ मिलितशिलीमुखपाटलि पटलकृतस्मरतूणविलासे ॥४॥ विगलितलज्जितजगदवलोकनतरुणकरुणकृतहासे ॥ विरहिनिकृंतनकुंतमुखाकृतिकेतुकिदंतुरिताशे ॥ ५ ॥ माधविकापरिमललललिते

नवमालतिजातिसुगंधौ ॥ मुनिमनसामपिमोहनकारिणितरुणाकारणबंधौ ॥ ६ ॥
स्फुरदतिमुक्तलतापरिरंभणमुकुलितपुलकितचूते ॥ वृंदावनविपिनेपरिसरपरिगतय
मुनाजलपूते ॥७॥ श्रीजयदेवभणितमिदमुदयतिहरिचरणस्मृतिसारं ॥ सरसवसंतस
मयवनवर्णनमनुगतमदनविकारं ॥ ८ ॥ ४ ॥ ॐ

(5) स्मरसमरोचितविरचितवेशा ॥ गलितकुसुमदलविलुलितकेशा ॥ १ ॥ कापिच
पलामधुरिपुणा ॥ विलसतियुवतिरधिकगुणा ॥ ध्रु० ॥ हरिपरिरंभणवलितविकारा
॥ कुचकलशोपरितरलितहारा ॥ २ ॥ विचलदलकललितानन चंद्रा ॥ तदधरपानर
भसकृततंद्रा ॥ ३ ॥ चंचलकुंडलललितकपोला ॥ मुखरितरशनजघनगतिलोला
॥ ४ ॥ दयितविलोकितलज्जितहसिता ॥ बहुविधकूजितरतिरसरासिता ॥ ५ ॥
विपुलपुलकपृथुवेपथुभंगा ॥ श्वसितनिमीलितविकसदनंगा ॥ ६ ॥ श्रमजलकण
भरसुभगशरीरा ॥ परिपतितोरसिरतिरणधीरा ॥ ७ ॥ श्रीजयदेवभणितहरिरमितं
कलिकलुषंजनयतुपरिशमितं ॥ ८ ॥ ५ ॥ ॐ

(6) विरचितचाटुवचनरचनंचरणरचितप्रणिपातं ॥ संप्रतिमंजुलवंजुलसीमनिकेलि
शयनमनुयातं ॥१॥ मुग्धेमधुमथनमनुगतमनुसरराधिके ॥ ध्रु० ॥ घनजघनस्तन
भारभरेदरमंथरचरणविहारं ॥ मुखरितमणिमंजीरमुपैहिविधेहिमरालविकारं ॥ २ ॥
शृणुरमणीयतरंतरुणीजनमोहनमधुरिपुरावं ॥ कुसुमशरासनशासनवंदिनिपिकनिक
रेभजभावं ॥ ३ ॥ अनिलतरलकिसलयनिकरेणकरेणलतानिकुरंबं ॥ प्रेरणमिवकर
भोरुकरोतिगतिंप्रतिमुंचविलंबं ॥ ४ ॥ स्फुरितमनंगतरंगवशादिवसूचितहरिपरिरंभं
॥ पृच्छमनोहरहारविमलजलधारममुंकुचकुंभं ॥ ५ ॥ अधिगतमखिलसखीभिरि
दंतववपुरपिरतिरणसज्जं ॥ चंडिरसितरशनारवडिंडिममभिसरसरसमलज्जं ॥ ६ ॥
स्मरशरसुभगनखेनकरेणसखीमवलंब्यसलीलं ॥ चलवलयक्वणितैरवबोधयहरिम
पिनिजगतिशीलं ॥ ७ ॥ श्रीजयदेवभणितमधुरीकृतहारमुदासितवामं ॥ हरिविनि
हितमनसामधितिष्ठतुकंठतटीमभिरामं ॥८॥६॥ ॐ

(7) अवलोकयसखिमंजुलकुंजे ॥ रमयतिगोकुलरमणीरिहगोकुलपतिरलिकोकिल
पुंजे ॥ध्रु०॥ माधविकालतिकारतिकारिणिरागिणिरुचिरवसंते ॥ त्रिविधपवनकृतविर
हविधूजनमदननृपतिसामंते ॥ १ ॥ किंशुककुसुमसमीकृतदयिताधररसपानविनोदे
॥ मधुपसमाहतबकुलमुकुलमधुविकसितसरसामोदे ॥ २ ॥ नवनवमंजुरसालमंज
रीबोधितयुवजनमदने ॥ दयितारदनसमद्युतिमुकुलितकुंदरुचिरस्मितवदने ॥ ३ ॥
युवतीजनमानसगतिमानमहागजमदमृगराजे ॥ कोकिलकुलकूजितविरहानलतापि
तपथिकसमाजे ॥ ४ ॥ विततपरागकुसुमसंबाधिसदागतिवासितगहने ॥ कुसुमितविं
शुककैतवविस्तृतविरहिदहनवनदहने ॥ ५ ॥ पल्लवकुसुमसमेताविपिनाविस्मारितयुव
जनगेहे ॥ मदनदहनदीपनविद्रावितविरहिदीनजनदेहे ॥ ६ ॥ जगतिसमानशी
ततदितरविरचितनिजरुचिराकारे ॥ वनिताजनसंयोगसेविजनजनितानंदसुभारे

॥ वसंत राग ॥ अष्टपदी ॥

॥ ७ ॥ इतिहितकारिवचनमतिमानिनिमानयगोकुलवासे ॥ कुरुरतिमतिशयकरुण रसव्रतिवितरमातिंहरिंदासे ॥ ८ ॥ ७ ॥ 卐

(६) गावतचली वसंतवधावन नंदरायदरवार ॥ वानिकवनिठनि चोखमोखसों ब्रज जन सबइकसार ॥ १ ॥ अंगियालालल्सत तनसारी झूमकनवउरहार ॥ वेनं ग्रथितरुरतनितंबपर कहाकहूं वडडेवार ॥ २ ॥ म्रगमदआड वडेरीअखियां आंज अंजनपूरि ॥ प्रफुलितवदन हसतदुलरावत मोहनजीवनमूरि ॥ ३ ॥ पगजेहरि के हरिकटिकिंकिनि रह्योविथिकिसुनिमार ॥ घोषघोषप्रति गलिनगलिनप्रति बिछु वनके झनकार ॥ ४ ॥ कंचनकुंभसीसपरलीने मदनसिंधुतेंभरिकें ॥ ढांपेपीतवसनजत ननरांचिमोरमंजुरीधरिकें ॥ ५ ॥ अबीरगुलाल अरगजासोंधोविधिनजात विस्तारी ॥ मेनसेन जोनारदेनकों कमलनकमलानिथारी ॥ ६ ॥ पोहोंचीजाय सिंघपोरी जब विपुलजुवतिसमुदाई ॥ निजमंदिरतें निकसिजसोदा सनमुखआगेंआई ॥ ७ ॥ भईभीर भीतरेभवननमें जहांब्रजराजकिसोर ॥ भरतभावते प्रानपियाकों घेरिफेरिचहुंओर ॥ ८ ॥ ब्रजरानीजब मुरिमुसिक्यानी पकरनभईजबकरकी ॥ लेसंग सखी लखी कछुवतियां मिसही मिस उतसरकी ॥ ९ ॥ कुमकुम रंगसों भरि पिचकारी छिरकें जे सुकुमारी ॥ वरजत छींटे जात द्रगनमें धनि वे पोंछनहारी ॥ १० ॥ चंदन वंदन चोवा माथिकें नीलकंज लपटावे ॥ अलक सिथल ओर पाग सिथल अति पुनि वे बांधि बंधावे ॥ ११ ॥ भरत निसंक भरे अकवारी भुजनवीच भुज मेलें ॥ उनमद ग्वाल वदत नहीं काहू झेलखेल रसरेलें ॥ १२ ॥ कियो रगमगो ललित त्रिभंगी भयो ग्वालिनि मनभायो ॥ टकझकमें झुकि एकही विरियां लालन-कंठ लगायो ॥ १३ ॥ तालमृदंग लीयें श्रीदामा पोहोंचे आय सहाई ॥ हलधर सुवल तोक मधुमंगल अपनी भीर बुलाई ॥ १४ ॥ खेल मच्यो मनिखच्ति चोकमें कविपे कहा कहि जावे ॥ चतुर्भुज प्रभुगिरिधरनलालछवि देखेंही वनिआवे ॥ १५ ॥ ९ ॥ 卐